''स्पंदन''

समाचार - पत्रिका

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था, चाचियावास (अजमेर) का त्रैमासिक समाचार पत्र
(सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत संस्था पंजीयन सं. 19/ए.जे.एम./87-88)

केवल निजी वितरण हेतु | अंक (19) वर्ष (4) | मार्च 2013 से मई 2013

"वाणी/भाषा विशेषांक"

विचारों का आदान-प्रदान हमारी प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है प्रत्येक छोटे एवं बड़े जीव अपनी सूचनाओं को व्यक्त करते है परन्तु भाषा के द्वारा अपने विचारों को अनूठे ढ़ंग से प्रकट कर पाना केवल मानव के लिए ही सम्भव हैं।

शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किन्तु मजबूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रूचियों, क्षमताओं यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृतियों को भी आकार देती है।

दुनिया का हर बच्चा-चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो भाषा का इस्तेमाल कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है कि दुनिया को समझाना और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढिया औजार का काम करती है। जब तक हम बच्चे की निगाह से देखने और बच्चे की जिन्दगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते है तब तक हम अध्यापक, माता-पिता या देखरेख करने वालों के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।

इस अंक में वाणी-भाषा पर विस्तार से पढ़ेगें।

मुख्य सम्पादक

दिनांक 24 फरवरी 2013 संस्था की मुख्य कार्यकारी श्रीमती क्षमा आर.कौशिक को पब्लिक सर्विस केटेगरी में माई एफ.एम. (943) की ओर से ''जियो दिल से अवार्ड'' से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड माई एफ.एम. अधिकारी एवं पण्डित विश्व मोहन भट्ट के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

लिखते रहिए — आपके सुझावों एवं फीड बैक का हमेशा इंतजार रहता है, अतः कृपया लिखते रहिए

सम्पादक मण्डल
मुख्य सम्पादक : राकेश कुमार कौशिक
: सम्पादन समिति :
क्षमा आर. कौशिक, तरुण शर्मा, लक्ष्मणसिंह चौहान

मनुष्य के जीवन में भाषा अधिगम और विकास एक अत्यंत रोचक क्रिया है जब बच्चा अपना पहला शब्द बोलता है तो वह भाषा का जादुई द्वार सा खोज निकालता है एवं जीवन भर इस जादुई कौशल को सीखता रहता है। वाक् तथा भाषा का एक सामान्य बालक में किस प्रकार विकास होता है। इसी जानकारी को आधार पर बच्चों की छोटी उम्र से शुरू होने वाली भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों को सुधारने में सहायता होगी।

वाणी मानव का वह गुण है जिससे वह अन्य लोगों से सार्थक सम्बन्ध स्थापित करता है और अपनी भावनाओं, विचारों तथा आवश्यकताओं से दूसरे लोगों को अवगत कराता है, परन्तु यह गुण श्रवण के गुण से सह-सम्बन्धित है, अतः आधार ज्ञान के रूप में यह समझना आवश्यक है कि हम कैसे सुनते तथा बोलते हैं।

आधार ज्ञान (Basic Knowledge)

अधिकांश व्यक्ति भाषा एवं शब्दों के माध्यम से ही एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। उपयुक्त वाणी विकास के लिए एक सामान्य श्रवण तन्त्र (Auditory System) उपयुक्त समृद्ध वातावरण तथा सामान्य मानसिक योग्यता की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार स्वर उच्चारण के लिए स्वर नलिका (Vocal Track), मुख-नासिका गुहा (Oral-Nasal Cavity), बोलने से सम्बन्धित अन्य अंग (Articulaters) तथा उनका तंत्रीय-मांस पेशीय नियन्त्रण (Neuromuscular Control) के साथ-साथ स्वरों का सही प्रत्यक्षीकरण आवश्यक है।

यदि बालक में किसी प्रकार की आंगिक विकृति (Organic Deformity) हो अथवा वातावरण में किसी प्रकार की कमी, तो वह बालक के वाणी-विकास को प्रभावित कर सकती है। भाषा तथा वाणी विकास बालक के मनोवैज्ञानिक वातावरण को भी प्रभावित करता है। वातावरण की ऐसी कोई भी कमी जो बच्चे के शारीरिक, मानसिक या मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करती है, वह उसके वाणी-विकास को भी प्रभावित कर सकती है।

हम कैसे सुनते हैं? (How do we Hear?)

जो आवाज हमारे कानों तक पहुँचती है, पहले वह कान के पर्दों से कम्पन पैदा करती है। यह कम्पन तीन छोटी हड्डियों के द्वारा कानों के मध्य भाग (Middleear) मध्य कर्ण, (Hammer) हॅमर, (Anvil) एनविल एवं

स्टियरअप से गुजरकर (Cochlea) कॉकलियों तक पहुँचती है। इसका परिणाम कॉकलियों के द्रवों में गतिमय होता है। कॉकलियों के अन्दर संवेदनशील कोशिकाएँ (Sensitive Cells) होती हैं, जो कि इस गति को नोट कर लेती हैं और न्यूरल क्रियाओं (Neural Activity) की शुरूआत करती हैं जो कि ऑडिटरी नर्व के द्वारा दिमाग तक पहुँचती जाती है। इस प्रकार से हम सुनते हैं।

हम कैसे बोलते हैं? (How do we Speak?)

बोलना एक विस्तृत प्रक्रिया है। वह संरचनाएं जिनका उपयोग, चूसने, काटने, चबाने एवं निगलने के लिए किया जाता है, वही बोली के उत्पादन में उपयोग में लायी जाती है। गले में स्थिर यंत्र (Vocal cords), जो कि फेफड़ों में किसी बाहरी वस्तु के जाने को रोकने के लिए बनायी गयी है, उसका उपयोग आवाज निकालने में किया जाता है। फेफड़ों से बाहर निकाली गयी हवा का उपयोग कंठ ध्वनि में कंपन पैदा करने के लिए जिससे कि आवाज पैदा होती है, किया जाता है। आवाज उसी तरह पैदा होती है, जैसे कि एक गुब्बारा आवाज पैदा करता है, जब उसका मुँह चौड़ा किया जाता है। इस प्रकार वे संरचनाएं जिनका उपयोग सांस लेने एवं खाने के लिए किया जाता है। हालाँकि, दिमाग इन सबका मुख्य नियन्त्रक (Master Controller) है। बोलना एक सांस लेने की, अभिव्यक्त करने की एवं ध्वनि निकालने की नियन्त्रित प्रक्रिया है।

बोलना उन आवाजों को कहते हैं जो कि मुँह से निकाली जाती हैं एवं शब्दों का स्वरूप लेती है। बोलने के लिए बहुत-सी चीजों का क्रम में होना जरूरी है, जैसे कि-

- अगर दिमाग किसी से संवाद स्थापित करना चाहता है तो दिमाग में विचार/बात आनी चाहिए।
- दिमाग की बात को मुख तक भेजना जरूरी है।
- दिमाग का मुख को बोलना जरूरी है कि किन शब्दों को कहा जाना है और उन शब्दों के लिए किस प्रकार की आवाज निकाली जाए।
- उच्चारण एवं बोलने के पैटर्न को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- दिमाग का जबड़ों के पसलियों को उचित सन्देश भेजना भी जरूरी है, उन पसलियों को जो कि आवाज पैदा करती हैं एवं जीभ, होठ एवं जबड़ों को नियन्त्रित करती हैं।
- इन पसलियों में मजबूती एवं दिमाग द्वारा नियन्त्रित होने की क्षमता होनी चाहिए।
- फेफड़ों में पर्याप्त हवा होनी चाहिए एवं छाती की पसलियाँ पर्याप्त रूप से मजबूत होनी चाहिए ताकि वोकल कॉर्ड्स (Vocal Cords) में कम्पन पैदा कर सकें। हवा का अन्दर नहीं, बाहर जाना, उपयोगी संवाद के लिए जरूरी है।
- वोकल कॉर्ड्स का अच्छी हालत में होना जरूरी है ताकि भाषण स्पष्ट हो एवं जोर से सुना जा सके।
- बोले गए शब्द हमारी श्रवण-शक्ति द्वारा परखे जाते है। यह बोले गए शब्दों के पुनर्विचार परिस्थिति के लिए नए शब्द सीखने में मदद करता है। अगर बोले गए शब्द ठीक से नहीं सुने जाते हैं, तो वाचा की पुनर्निर्मिती के समय बोलने में गड़बड़ी होगी।
- दूसरा व्यक्ति हमारे साथ संवाद का इच्छुक होना चाहिए एवं सुनने के लिए राजी होना चाहिए।

अगर पर्याप्त रूप से उत्तेजना उपलब्ध हो तो लगभग सभी बच्चों के लिए, ये प्रक्रियाएँ प्राकृतिक रूप से होती हैं।

कुछ बच्चों के लिए यह प्राकृतिक क्रम टूट जाता है। एक बार अव्यवस्था की जड़ का पता चल जाए तो इन क्रमों को सीधे एवं इच्छा शक्ति द्वारा सुधारा जा सकता है।

वाणी-दोष का अर्थ (Meaning of Speech Defect)

हकलाने तथा दोषयुक्त वाणी वाले बालक में वे बालक आते हैं जो नाक से बोलते हैं, धीरे-धीरे बोलते हैं, कर्कश स्वर में बोलते हैं, तुतलाते या हकलाते है। वाणी सम्बन्धी दोषों का कारण त्रुटिपूर्ण अनुकरण तथा माता-पिता की लापरवाही है। हकलाने का कारण सांवेगिक होता है। ऐसे बालकों का परिवेश मानसिक तनाव से मुक्त होना चाहिए। ध्वनि-विज्ञान के आधार पर उन्हें ठीक बोलने का अभ्यास कराया जाये तथा उन्हें अच्छे वक्ताओं का अनुकरण करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर शल्य क्रिया की सहायता भी ली जा सकती है। भारतीय विद्यालयों में इस प्रकार के आने वाले बच्चों की बड़ी संख्या होती है, जिसका मूल कारण है माता-पिता का अशिक्षित या अल्प-ज्ञानी होना। इसके कारण बच्चों का उच्चारण शैशवावस्था से ही बिगड़ जाता है और विद्यालय में प्रवेश के उपरान्त यदि शिक्षिका व साथियों का अच्छा प्रभाव न पड़े तो जीवन पर्यन्त बोलने का दोष स्थायी हो जाता है।

स्कूल के बालकों में बोलने की अक्षमता वाले बालकों की संख्या काफी होती है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि उनकी अक्षमता प्रशासन की नीतियों, कक्षा तथा अध्यापक के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित होती है। बच्चे तथा युवक लिखने से अधिक बोलते है। समाज में सम्बन्ध स्थापित करने के लिए बोलने की आवश्यकता पड़ती है। अत: बोलने से सम्बन्धित दोषों को दूर करने के लिए विद्यालयों को महत्वपूर्ण कदम उठाना चाहिए।

(वाणी-दोषयुक्त एवं दृष्टि-अक्षम बालक: कारण, पहचान एवं उपचार : शशीप्रभा शर्मा से साभार)

भाग्य संयोग से नहीं बनता है। यह तो आपके चयन से बनता है - विलियम जेनिंग्स ब्रायन

सुर्खियां

मार्च 2013 से मई 2013

मार्च 2013

(1) संभाग स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता : राजस्थान महिला कल्याण मण्डल संस्था एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग अजमेर के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय संभाग स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन पटेल स्टेडियम अजमेर में 7 व 8मार्च 2013 को किया गया इस आयोजन मे मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल चाचियावास, अजमेर, संजय इन्क्लूसिव स्कूल ब्यावर, सोना मनोविकास मन्दिर भीलवाड़ा, संकल्प मूक-बधिर स्कूल लाडनू, नागौर, सर्व शिक्षा अभियान श्रीनगर, बधिर विद्यालय अजमेर, व गृह आधारित पुनर्वास कार्यक्रम सहित कुल 8विद्यालयो के 236विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन अजमेर संभागीय आयुक्त श्रीमती किरण सोनी गुप्ता, द्वारा श्रीमती विजय लक्ष्मी गौड़ उपनिदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग अजमेर, श्री सोम रत्न आर्य, उपाध्याय राजस्थान बैडमिन्टन संघ राजस्थान व अन्य गणमान्य व्यक्ति श्री ललित कुमार सोगानी, श्री नवीन सोगानी, श्री एसएननुवाल, श्रीमती क्षमा आर. कौशिक, श्री सागरमल कौशिक आदि की उपस्थिति में किया गया। आयोजन के दौरान निम्न

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1.एथलीट इवेन्ट :- इसमें 50, 100, 200 मीटर की दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, शोर्ट फुट, सॉफ्ट बॉल थ्रो आदि का आयोजन किया गया था। खिलाड़ियो को चार आयु वर्ग में बांटा गया जिसमें 8से 11 वर्ष, 12 से 15 वर्ष, 16से 21 वर्ष, एवं 22 वर्ष से ऊपर।

2.टीम इवेन्ट :- टीम इवेन्ट में बूची, बेडमिन्टन, रोलर स्केटिंग, प्रतियोगिताएं आयोजित की गई इसमें तीन आयु वर्ग बनाए गए जिसमें 15 वर्ष से कम, (जूनियर समुह), 16वर्ष से 21 वर्ष (सीनियर समूह) व 22 वर्ष से ऊपर मास्टर समूह थे। राजस्थान महिला कल्याण मण्डल की मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल चाचियावास व संजय इन्क्लूसिव स्कूल ब्यावर से कुल 46खिलाड़ियो ने भाग लिया था। आयोजन का समापन समारोह 8मार्च 2013 को जिला प्रमुख, श्रीमती सुशील कँवर पलाड़ा की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अन्य अतिथि के रूप में श्री सी.आर.मीणा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर अजमेर, श्री भंवर सिंह पलाड़ा, अध्यक्ष खो-खो संघ राजस्थान, श्री महावीर सिंह, अति. जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान, अजमेर उपस्थित थे। प्रतियोगिताओं मे प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को जिला प्रमुख व अन्य अतिथियों के द्वारा ईनाम वितरित किए गए।

(2) होली समारोह :- विद्यालय में होली समारोह का आयोजन करने का मुख्य उद्देश्य बच्चों में सामाजिक, रचनात्मक, व्यावासायिक मनोरंजनात्मक व भारतीय संस्कृति के ज्ञान को बढ़ाना व उसके सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना हैं। मीनू मनोविकास मन्दिर इन्क्लूसिव स्कूल में होली समारोह का आयोजन 22 मार्च 2013 को विद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। समारोह से पूर्व सभी कक्षाओं के बच्चों ने अपने-अपने कक्षाध्यापकों के सहयोग व निर्देशन मे होली के ग्रिटिंग कार्ड बनाए एवं समारोह की तैयारी की। होली समारोह में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ-साथ सामान्य बच्चों व आस-पास के गाँवों से बुजुर्ग महिला पुरूषों ने भी

भाग लिया। सर्व प्रथम सभी ने मिलकर होलिका दहन किया तत्पश्चात बुर्जुगों ने सभी बच्चों को राजस्थान की परम्पराओं की जानकारी गैर नृत्य व अन्य गतिविधियों द्वारा दी। सभी ने एक-दूसरे के रंग बिरंगी गुलाल लगाकर सम्मान किया व होली के रंग बिखेरे।

अप्रैल 2013

वार्षिक उत्सव :- यह प्रथम अवसर था जब मीनू मनोविकास मन्दिर स्कूल का वार्षिक उत्सव इतने बड़े स्तर पर जवाहर रंग मंच अजमेर में 27 अप्रेल 2013 को मनाया गया। इस बार वार्षिक उत्सव की थीम थी ''बेटी बचाओ'' इस वार्षिक उत्सव में सामान्य व विशेष आवश्यकता वाले सभी बच्चों ने अपनी-अपनी क्षमता व योग्यता के अनुसार जवाहर रंग मंच पर प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमता व योग्यता को समाज के सम्मुख प्रदर्शित करना था जिससे समुदाय के लोग इन बच्चों की क्षमताओं व बुद्धिमता को पहचान सके। कार्यक्रम को देखकर एक पल के लिए भी दर्शको को अनुभव नही हुआ कि इनमे से सामान्य बच्चे कौन से हैं व विशेष आवश्यकता वाले कौन से हैं। विशेष बात यह रही कि विद्यालय के सभी बच्चों (93 विशेष आवश्यकता वाले व 72 सामान्य) ने कार्यक्रम में भाग लिया। लगभग 500 दर्शको ने कार्यक्रम का लुफ्त उठाया। कार्यक्रम के अन्त मे विद्यालय से 5 विद्यार्थियों को अलग-अलग क्षेत्रों में इस वर्ष विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी के रूप मे चुना गया जिनमें वोकेशनल कक्षा के छात्र वसी उल्लाह को सर्वश्रेष्ठ एथलीट, कक्षा 1st की छात्रा नेहा को स्वच्छता, कक्षा 2nd की छात्रा चन्द्रिका को समय बद्धता, कक्षा 5th के छात्र करण पुजारा को शिक्षा व फाल्गुन चौहान को सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु चुना गया। मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित श्री सुरेन्द्र सिंह शेखावत, पूर्व नगर निगम अध्यक्ष, श्रीमती मंजु तोषनीवाल समाज सेविका, श्री नासिर अली मदनी, विभागाध्यक्ष संगीत विभाग महाविद्यालय, श्री सत्यदेव यादव, श्री अजय विक्रम सिंह आई.ए.एस.रक्षा सचिव (भूतपूर्व) श्री जोगेन्द्र सिंह

दुआ एडवाइजर जिला कानून समिति, अजमेर के द्वारा सभी बच्चों को सर्वश्रेष्ठ के खिताब से नवाजा गया। मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए श्री सुरेन्द्र सिंह शेखावत व श्रीमती तोषनीवाल ने कहा कि ''हम हम मीनू मनोविकास मन्दिर के अध्यापको को धन्यवाद देते है कि उन्होने इन विमन्दित बच्चों के साथ महान कार्य करते हुए इन्हे समाज के सामने लाने का प्रयास किया।'' सभी अभिभावक अपने बच्चों कों सामान्य बच्चों की तरह परफोंम करते देख आश्चर्य चकित रह गए और अपने बच्चों पर गर्व करते हुए फुले नहीं समा रहे थे।

दिनांक 17 अप्रेल 2013 से 22 अप्रेल 2013 के दौरान स्पेशल ऑलेम्पिक भारत (एसओब्री.) द्वारा फीफा यूनिफाईड वर्ल्ड कप चयन हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन गाचीबोली स्टेडियम, हैदराबाद में किया गया। जिसमें राजस्थान की टीम में राजस्थान महिला कल्याण मण्डल से मुकेश जाट, वसी उल्लाह, व गुरूविन्दर सिंह तथा अक्षय प्रतिशठान चिड़ावा, झून्झूनु से राकेश व मनोज ने नेशनल कोच श्री भगवान सहाय शर्मा के साथ भाग लिया। इन पांचो छात्रों का चयन लोअर श्रेणी में किया गया था। इस शिविर मे पूरे भारत से 20 राज्यो के 5-5 खिलाड़ियों व 1-1 कोच ने भाग लिया था। शिविर का उद्घाटन राष्ट्रीय खेल निदेशक श्री विक्टर वॉज व आन्ध प्रदेश के क्षेत्रीय निदेशक श्री राज शेखर रेडडी ने किया था। व्यक्तिगत श्रेणी में मीनू मनोविकास मन्दिर के छात्रों की परफोरमेन्स अच्छी रही। मुकेश जाट को नेतृत्व क्षमता हेतु खिताब दिया गया।

प्रतिष्ठा में, _____

मुद्रित सामग्री | बुक पोस्ट

_____

_____

राजस्थान महिला कल्याण मण्डल
''विश्वामित्र आश्रम''
ग्राम - चाचियावास (जनाना अस्पताल से 4 किमी आगे),
पोस्ट - गगवाना, अजमेर, जिला-अजमेर (राज.) 305023
Email : rmkm_ajm@yahoo.com, rmkm.a@rediffmail.com
Ph.# : 0145-2794481, Fax : 0145-2794482, Mob.: 9829140992

सौजन्य : Vibha
मुद्रक : प्रगति प्रिन्टर्स, पुरानी मंडी, अजमेर